

سُورَةُ الطُّورِ

Surah 52 — At-Tur (The Mount) · Meccan · 49 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَالطُّورِ

(कोहे) तूर की कसम

2

وَكِتَابٍ مَّسْطُورٍ

और उसकी किताब (लौहे महफूज़) की

3

فِي رَقٍّ مَّنْشُورٍ

जो कुशादा औराक में लिखी हुई है

4

وَالْبَيْتِ الْمَعْمُورِ

और बैतुल मामूर की (जो काबा के सामने फरिश्तों का क़िब्ला है)

5

وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوعِ

और ऊँची छत (आसमान) की

6

وَالْبَحْرِ الْمَسْجُورِ

और जोश व ख़रोश वाले समन्दर की

7

إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ

कि तुम्हारे परवरदिगार का अज़ाब बेशक वाकेए होकर रहेगा

8

مَا لَهُ ^۹ مِنْ دَافِعٍ ^{۱۰}

(और) इसका कोई रोकने वाला नहीं

9

يَوْمَ تَمُورُ السَّمَاءُ مَوْرًا ^۱

जिस दिन आसमान चक्कर खाने लगेगा

10

وَتَسِيرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ^۱

और पहाड़ उड़ने लगेंगे

11

فَوَيْلٌ ^۱ يَوْمَئِذٍ ^۲ لِلْمُكَذِّبِينَ

तो उस दिन झुठलाने वालों की खराबी है

12

الَّذِينَ هُمْ فِي خَوْضٍ ^۱ يَلْعَبُونَ

जो लोग बातिल में पड़े खेल रहे हैं

13

يَوْمَ يُدْعَوْنَ إِلَىٰ نَارِ جَهَنَّمَ دَعَاً

जिस दिन जहन्नुम की आग की तरफ उनको ढकेल ढकेल ले जाएँगे

14

هَذِهِ النَّارُ الَّتِي كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ

(और उनसे कहा जाएगा) यही वह जहन्नुम है जिसे तुम झुठलाया करते थे

15

أَفَسِحْرٌ هَذَا أَمْ أَنْتُمْ لَا تُبْصِرُونَ

तो क्या ये जादू है या तुमको नज़र ही नहीं आता

16

أَصْلَوْهَا فَأَصْبِرُوا؟ أَوْ لَا تَصْبِرُوا؟ سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ ۚ إِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ

इसी में घुसो फिर सब करो या बेसब्री करो (दोनों) तुम्हारे लिए एकसाँ हैं तुम्हें तो बस उन्हीं कामों का बदला मिलेगा जो तुम किया करते थे

17

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ ۖ وَنَعِيمٍ

बेशक परहेज़गार लोग बागों और नेअमतों में होंगे

18

فُكِّهِنَّ بِمَا عَاثَلَهُمْ رَبُّهُنَّ ۖ وَقَقَلَهُنَّ رَبُّهُنَّ عَذَابَ الْجَحِيمِ

जो (जो नेअमतें) उनके परवरदिगार ने उन्हें दी हैं उनके मज़े ले रहे हैं और उनका परवरदिगार उन्हें दोज़ख के अज़ाब से बचाएगा

19

كُلُوا ۚ وَأَشْرِبُوا ۚ هَٰذَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ

जो जो कारगुज़ारियाँ तुम कर चुके हो उनके सिले में (आराम से) तख्तों पर जो बराबर बिछे हुए हैं

20

مُتَّكِنِينَ عَلَىٰ سُرُرٍ ۚ مَّصْفُوفَةٍ ۚ وَزَوَّجْنَاهُم بِحُورٍ عِينٍ ۚ

तकिए लगाकर खूब मज़े से खाओ पियो और हम बड़ी बड़ी आँखों वाली हूर से उनका ब्याह रचाएँगे

21

وَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ بِإِيمَانٍ أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَا أَلَتْنَاهُمْ مِّنْ عَمَلِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ ۚ كُلُّ امْرِئٍۭ بِمَا كَسَبَ رَهِينٌ ۚ

और जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और उनकी औलाद ने भी ईमान में उनका साथ दिया तो हम उनकी औलाद को भी उनके दर्जे पहुँचा देंगे और हम उनकी कारगुज़ारियों में से कुछ भी कम न करेंगे हर शख्स अपने आमाल के बदले में गिरवी है

22

وَأَمَدَدْنَاهُمْ بِفُكْهَةٍ ۚ وَلَحْمٍ ۚ مِّمَّا يَشْتَهُونَ

और जिस किस्म के मेवे और गोश्त को उनका जी चाहेगा हम उन्हें बढ़ाकर अता करेंगे

23

يَتَنَزَّعُونَ فِيهَا كَأْسًا ۖ لَا لَغْوٌ فِيهَا وَلَا تَأْثِيمٌ ۚ

वहाँ एक दूसरे से शराब का जाम ले लिया करेंगे जिसमें न कोई बेहूदगी है और न गुनाह

24

ۚ وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ ۚ لَهُمْ كَأَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ ۚ مَّكَنُونٌ ۚ

(और खिदमत के लिए) नौजवान लड़के उनके आस पास चक्कर लगाया करेंगे वह (हुस्न व जमाल में) गोया एहतियात से रखे हुए मोती हैं

25

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ

और एक दूसरे की तरफ रूख करके (लुत्फ की) बातें करेंगे

26

قَالُوا ۚ إِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِي أَهْلِنَا مُشْفِقِينَ

(उनमें से कुछ) कहेंगे कि हम इससे पहले अपने घर में (खुदा से बहुत) डरा करते थे

27

فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا وَوَقَّنَا عَذَابَ آلِ السَّمُومِ

तो खुदा ने हम पर बड़ा एहसान किया और हमको (जहन्नुम की) लौ के अज़ाब से बचा लिया

28

إِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوهُ ۚ إِنَّهُ ۚ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيمُ

इससे क़बल हम उनसे दुआएँ किया करते थे बेशक वह एहसान करने वाला मेहरबान है

29

فَذَكِّرْ فَمَا أَنْتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٌ ۚ وَلَا مَجْنُونٌ

तो (ऐ रसूल) तुम नसीहत किए जाओ तो तुम अपने परवरदिगार के फज़ल से न काहिन हो और न मजनून किया

30

أَمْ يَقُولُونَ شَاعِرٌ ۚ نَّتَرَبَّصُ بِهِ ۚ رَيْبَ الْمُنُونِ

क्या (तुमको) ये लोग कहते हैं कि (ये) शायर हैं (और) हम तो उसके बारे में ज़माने के हवादिस का इन्तेज़ार कर रहे हैं

31

قُلْ تَرَبَّصُوا ۚ فَإِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُتَرَبِّصِينَ

तुम कह दो कि (अच्छा) तुम भी इन्तेज़ार करो मैं भी इन्तेज़ार करता हूँ

32

أَمْ تَأْمُرُهُمْ أَحْلَمُهُمْ بِهَذَا ۚ أَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ

क्या उनकी अक्लें उन्हें ये (बातें) बताती हैं या ये लोग हैं ही सरकश

33

أَمْ يَقُولُونَ تَقَوَّلَهُ ۚ بَلْ لَا يُؤْمِنُونَ

क्या ये लोग कहते हैं कि इसने कुरान खुद गढ़ लिया है बात ये है कि ये लोग ईमान ही नहीं रखते

34

فَلْيَأْتُوا بِحَدِيثٍ مِّثْلِهِ ۚ إِن كَانُوا ۚ صَادِقِينَ

तो अगर ये लोग सच्चे हैं तो ऐसा ही कलाम बना तो लाएँ

35

أَمْ خُلِقُوا ۚ مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ الْخُلِقُونَ

क्या ये लोग किसी के (पैदा किये) बग़ैर ही पैदा हो गए हैं या यही लोग (मखलूक़ात के) पैदा करने वाले हैं

36

أَمْ خَلَقُوا ۚ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ ۚ بَلْ لَا يُوقِنُونَ

या इन्होंने ही ने सारे आसमान व ज़मीन पैदा किए हैं (नहीं) बल्कि ये लोग यक़ीन ही नहीं रखते

37

أَمْ عِنْدَهُمْ خَزَائِنُ رَبِّكَ أَمْ هُمُ الْمُصَدِّقُونَ

क्या तुम्हारे परवरदिगार के खज़ाने इन्हीं के पास हैं या यही लोग हाकिम हैं

38

أَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ ۚ يَسْتَمِعُونَ فِيهِ ۚ فَلْيَأْتِ مُسْتَمِعُهُمْ بِسُلْطَنٍ ۚ مُبِينٍ

या उनके पास कोई सीढ़ी है जिस पर (चढ़ कर आसमान से) सुन आते हैं जो सुन आया करता हो तो वह कोई सरीही दलील पेश करे

أَمْ لَهُ الْبَنَاتُ وَلَكُمْ الْبَنُونَ

क्या खुदा के लिए बेटियाँ हैं और तुम लोगों के लिए बेटे

أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا ۖ فَهُمْ مِّن مَّغْرَمٍ ۚ مُّثْقَلُونَ

या तुम उनसे (तबलीग़े रिसालत की) उजरत माँगते हो कि ये लोग कर्ज़ के बोझ से दबे जाते हैं

أَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ

या इन लोगों के पास ग़ैब (का इल्म) है कि वह लिख लेते हैं

أَمْ يُرِيدُونَ كَيْدًا ۚ ۚ فَالَّذِينَ كَفَرُوا ۖ هُمُ الْمَكِيدُونَ

या ये लोग कुछ दाँव चलाना चाहते हैं तो जो लोग काफ़िर हैं वह खुद अपने दाँव में फँसे हैं

أَمْ لَهُمْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ ۚ سُبْحَنَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ

या खुदा के सिवा इनका कोई (दूसरा) माबूद है जिन चीज़ों को ये लोग (खुदा का) शरीक बनाते हैं वह उससे पाक और पाक़ीज़ा है

وَإِنْ يَرَوْا ۖ كِسْفًا مِّنَ السَّمَاءِ سَاقِطًا ۖ يَقُولُوا ۚ سَحَابٌ مَّرْكُومٌ

और अगर ये लोग आसमान से कोई अज़ाब (अज़ाब का) टुकड़ा गिरते हुए देखें तो बोल उठेंगे ये तो दलदार बादल है

فَذَرَهُمْ حَتَّىٰ يُلَاقُوا ۖ يَوْمَهُمُ الَّذِي فِيهِ يُصْعَقُونَ

तो (ऐ रसूल) तुम इनको इनकी हालत पर छोड़ दो यहाँ तक कि वह जिसमें ये बेहोश हो जाएँगे

يَوْمَ لَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا ۚ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ

इनके सामने आ जाए जिस दिन न इनकी मक्कारी ही कुछ काम आएगी और न इनकी मदद ही की जाएगी

47

وَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ۖ عَذَابًا ۖ أَلَّا دُونَ ذَلِكَ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ

और इसमें शक नहीं कि ज़ालिमों के लिए इसके अलावा और भी अज़ाब है मगर उनमें बहुतेरे नहीं जानते हैं

48

وَأَصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا ۖ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِينَ تَقُومُ

और (ऐ रसूल) तुम अपने परवरदिगार के हुक्म से इन्तेज़ार में सब्र किए रहो तो तुम बिल्कुल हमारी निगेहदाश्त में हो तो जब तुम उठा करो तो अपने परवरदिगार की हम्द की तस्बीह किया करो

49

وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَإِدْبَرَ النُّجُومِ

और कुछ रात को भी और सितारों के गुरूब होने के बाद तस्बीह किया करो